मध्यकालीन हिंदी - मराठी साहित्य में शिवाजी महाराज : एक अध्ययन

प्रस्तावना :

साहित्य समाज का दर्पन और दीप दोनों होता है। जो तत्कालीन घटनाओं को और परिस्थिती को साहित्य के माध्यम से उजागर होता है। और साहित्य में समाज की नवसृजन की आशा होती है। इसके लिए वह दीप बनकर पथप्रदर्शित करता हैं।

हिंदी और मराठी के प्रारंभिक युग में जो साहित्य की अलग अलग धाराएँ प्रवाहित हूई थी उसमें से एक वीर काव्य है। इसकाल को हिंदी में रामचद्र शुक्ल ने 'वीरगाथा' काल भी कहाँ हैं। मराठी में भी इस परम्परा का अनुसरण हुआ हैं। मध्यकालीन भारत में राजा महाराजाओं की परम्परा रही थी। इस राजाओं के जो दरबारी कवि रहे उन्होने राजा के लिए प्रश्स्ती काव्य लिखा है। ऐसे कई भारतीय राजाओं में से एक जिनमें राष्ट्रियनेतृत्व की झांकी दिखाई देती है ऐसे छत्रपती शिवाजी महाराज एक है। जो आजतक आम लोगो के लिए जिज्ञासा का विषय बने हूए हैं। इनका महत्व इसलिए नही कि वह राजा थे बल्की अनका महत्व इसलिए है कि उनका कार्य विश्व में आज भी आदर के साथ याद किया जाता है। छत्रपती शिवाजी को अपने काव्य का विषय बनाकर अनेक साहित्यकारने अपने काव्य के माध्यम से उद्घटित करने का प्रयास किया है। जिसप्रकार हिंदी के मध्काल में छत्रपती शिवाजी महाराज को लेकर काव्य सृजित हुआ उसी प्रकार मराठी साहित्य में भी उसी समय उनको लेकर साहित्य निर्माण हुआ है। इसलिए ऐसे दोनों भाषाओं में छत्रपती शिवाजी को लेकर लिखा गया साहित्य का अनुसंधान कर पाठकों के सामने प्रस्तुत करना मेरा लक्ष रहा है।

विषय का हेतु / उद्धेश :

१) मध्यकालीन राजदरबारी काव्य का मूल्यांकन करना।

२) मध्यकालीन हिंदी और मराठी में व्यक्त शिवचरित्र को पाठकों के सामने रखना।

३) मध्यकालीन हिंदी-मराठी के साहित्य में छत्रपती शिवाजी के संदर्भ में समानताएँ / विषमताएँ और विशेषाओं को उजागर करना.

४) मध्यकालीन दोनो भाषा में व्यक्त शिवाजी के अनन्यसाधारण रहे कार्य को उजागर करना.

५) मध्यकालीन साहित्य के दोनो भाषाओं में सृजित छत्रपती शिवाजी की साहित्यिक प्रतिमा को उजागर करना।

६) मध्यकालीन दोनो भाषाओं के साहित्य में छत्रपती शिवाजी के मूल्य संवर्धन को प्रस्तुत करना।

७) मध्यकालीन शिवसाहित्य के सदर्भ में आए हूए तथ्यों के आधार पर मूल्यांकन करना।

८) मध्यकालीन राष्ट्रिय काव्यधारा के साहित्य को प्रस्तुत करना।

विषय का महत्व :

हिंदी और मराठी के उत्तरमध्यकालीन साहित्यकार ने अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक रहकर कवि कर्तव्य को निभाया है। जिसमें प्रमुख रूप से हिंदी में कवि भूषण, कवि लाल, जैसे अनेक कवि हूए जिन्होने छत्रपती शिवाजी की महत्तता को प्रतिपादन किया हैं। उसी प्रकार मराठी में संत तुकाराम, संत रामदास और मध्यकालीन शाहिरों ने भी यह काम बखुभी से निभाया है। मध्यकालीन दोनो भाषाओं के कवियों का उद्धेश केवल अपने राजाओं की भूरीभूरी प्रशंसा करना नहीं तो एक आदर्श राजा किसप्रकार होना चाहिए इसका विचार भी विचार देना भी रहा है।

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो इतिहास केवल घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत करता है। लेकिन साहित्य उस काल के इतिहास में चेतना का निर्माण करता है। अत: कभी काव्य को भी आधार मानकर इतिहास लिखा जाना चाहिए। तभी तो हम संपूर्ण इतिहास बना सकते हैं। इतिहास सिर्फ दर्शक होता है लेकिन साहित्य पथदर्शक होता है। तत्कालीन ऐतिहासिकता को भी साहित्य उजागर करता हैं। इस दृष्टि से छत्रपती शिवाजी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व को उजागर करते हूए आम लोगों को उनका सच्चा रूप दिखाना हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से अनेक राजाओं का अध्ययन करने पर यह कहा जाता है कि ‘राजा ऐसा था ?’ लेकिन

छत्रपती शिवाजी का अध्ययन करने पर लोग कहते है कि 'राजा ऐसा होना चाहिए।' यही उनकी ऐतिहासिक उपलब्धि है जो लोगों के सामने लाने का प्रयास रहेगा।

सामाजिक दृष्टिसे मध्यकालीन घोर श्रृंगारिकता के वातावरण में रहकर समाज कें नैतिक पतन को देखकर उस के प्रति दु:ख प्रकट किया गया है। भारतीय समाज में आपसी फूट, स्त्री की दूदर्शा, संकुचित राष्ट्रियता को एक सूत्र में बांधने का काम शिवकालीन साहित्य में हुआ है। यह साहित्य तत्कालीन समाज की संकुचितता को उजागर करता है। ऐसे वातावरण में सोए हुए समाज को जागृत करने का काम साहित्यकारों ने किया हैं। इस कारण समाज ने खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त किया है। इस दृष्टि से प्रस्तुत साहित्य महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

साहित्यिक दृष्टि से इस विषय में जो अलग-अलग प्रकार के छंद, उपमान, अलंकार, भाषा का रूप दिखाई देता है, इसमें परम्परागत उपमानों को फिर से सामने लाया। पौराणिक ग्रंथ, वैदिक ग्रंथ का साहारा लिया गया है। इस साहित्य पर दरबारी साहित्य का आरोप लगाया जाता है। लेकिन उन्होने सामाजिकता का भी चित्रण किया हैं जैसे जब राजा विलासीबन गया तो बिहारी जैसे कवियों ने राजा को सही रास्ते पर लाने का काम किया है। दोनो भाषाओं में सांस्कृतिक दृष्टि से छत्रपती शिवाजी की वीरता की तुलना भारतीय संस्कृति के वीर रामृ कृष्ण, विष्णु से की गयी है। इस दृष्टि से उनके सांस्कृतिक प्रेम को समझा जा सकता है।

शिवाजी पर लिखा गया साहित्य राष्ट्रिय एकता का प्रतिपादन करनेवाला साहित्य हैं। क्योंकि शिवाजी समुचे राष्ट्रवाद के जनक माने जा सकते हैं। इस देश के मूलनिवासी को एकसूत्र में बाँधने का काम किया है। हिंदी में भूषण जैसे कवि राष्ट्रियता का कवि कहे जा सकते है लेकिन उनपर जातीयता का आरोप लगाया गया हैं। उन्होने औरंगजेब का विरोध जातीयता के आधार पर नही बल्कि अत्याचार और अनिती के आधार पर किया हैं। मुगलों का विरोध साहित्य में इसलिए किया गया है कि वह विदेशी शासक हैं। इसकाल में स्वदेश का नारा बुलंद हुआ था। इसलिए राष्ट्रियता की दृष्टि से मध्यकालीन काव्य का अनुसंधान जरूरी जो हाता है।

अनुसंधान पद्धति :

ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धति में साहित्य का प्रधान उद्‌देश होता है कि ऐतिहासिक चरित्र नायक का यश गाकर उसके परिप्रेक्ष्य में आज की समस्याओं को सुलझाने में मार्गदर्शन करना, इतिहास की पुनरावृत्ती होती है। अतः वर्तमान समस्याओं का मार्गदर्शन हमें अतीत में प्राप्त होता हैं।

किसी विषय को समग्ररूप से स्पष्ट करने के लिए व्याख्यात्मक विवेचन बहोत जरूरी हो जाता हैं। अध्ययन की सरलता के लिए विषय का प्रतिपादन करना जरूरी है। इसलिए जहाँ जरूरत हो वहाँ व्याख्यात्मक अनुसंधान पद्धति का भी उपयोग किया जाएगा।

साहित्य में अनुसंधान करते समय आपका दृष्टिकोन निरपेक्ष होना चाहिए। इसके लिए आपको समिक्षात्मक दृष्टिकोन रखते हुए पाठकों के सामने गुण-दोषो को रखना जरूरी है। इसलिए अलोचनात्मक अनुसंधान की आवश्यकता हैं।

तुलनात्मक अनुसंधान जब समानताएँ और भिन्नताएँ, विशषताओं को अधोरेखीत करता है। इसलिए दो साहित्यकार या दोभाषाओं का साहित्य हो उसका अध्ययन करते समय तुलनात्मक अनुसंधान बहोत जरूरी हो जाता हैं। इस दृष्टि से हिंदी और मराठी के साहित्यकार द्वारा सृजित छत्रपती शिवाजी के स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। यह अध्ययन करते समय भाषिक दृष्टिकोण भी रखा जाएगा।

पूर्वा नुमान :

१) मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में छत्रपती शिवाजी को लेकर अत्यधिक साहित्य सृजन हुआ है।

२) छत्रपती शिवाजी पर तत्कालीन समय में ही नहीं तो परवर्तीकाल में भी साहित्य निर्माण हुआ है।

३) दोनो भाषाओं में सृजित छत्रपती शिवाजी पर साहित्य राष्ट्रिय काव्यधारा का साहित्य कहाँ जा सकता हैं।

४) मध्यकालीन दोनों भाषाओं के साहित्य में शिवाजी महाराज को लेकर अत्यधिक समानता दिखाई देती है।

५) दोनो भाषाओं में शिवाजी महाराज के उदात्त चरित्र को उजागर किया है।

६) इतिहास की तूलना में साहित्य में शिवाजी महाराज को लेकर अत्यधिक काल्पनिकता का उपयोग हुआ है।

७) छत्रपती शिवाजी महाराज को दोनों भाषाओं में सभी गुणों से युक्त सृजित किया है।

८) मध्यकालीन साहित्य में शिवाजी को आदर्श राजा के रूप में प्रस्तुत किया है।

९) मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में छत्रपती शिवाजी महाराज को राष्ट्र निर्माता के रूप में उजागर करते है।

१०) छत्रपती शिवाजी को देशी संस्कृति के रक्षक के रूप में प्रस्तुत किया है।

११) मध्यकालीन साहित्य में शिवाजी महाराज को समता, न्याय, स्वतंत्रता जैस संविधानिक मूल्यों में चित्रित किया है।

१२) छत्रपती शिवाजी का चरित्र श्रेष्ठ मानवीय गुणों से परिपूर्ण है।

१३) छत्रपती शिवाजी का आदर्श समाज के समुख रखने का काम किया है।

प्रस्तुत अनुसंधान को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर कार्य करने का मानस है। लेकिन इसमें आवश्यकतानूरूप बदलाव भी किया जा सकता हैं।

प्रथम अध्याय : मध्यकालीन हिंदी-मराठी के वीररस साहित्यकारों का संक्षिप्त साहित्य परिचय।

इस अध्याय में मध्यकालीन हिंदी के वीररस के प्रमुख कवि भूषण, कवि लाल, और समकालीनकवियों का संक्षेप में परिचय स्पष्ट किया जाएगा। मराठी के समकालीन संत तुकाराम, संत रामदास, शाहीर, लोकहितवादी, मं. फुले आदि १९०० तक के साहित्यिकों की संक्षेप में परिचय दिया जाएगा।

द्वितिय अध्याय : मध्यकालीन हिंदी साहित्य में छत्रपती शिवाजी का स्वरूप।

इस अध्याय में समकालिन कवि भूषण कृत १६७४ में शिवराज भूषण ग्रंथ और कविलाल कृत छत्रप्रकाश में और १६९४ में छत्रपती राजाराम के सेवक कृष्णाजी आनंद लिखित 'सभासद बखर' का अध्ययन करते हुए सन. १८९० से १९०० तक के साहित्य पर आधारित छत्रपती शिवाजी के स्वरूप का अध्ययन किया जाएगा।

तृतीय अध्याय : मध्यकालीन मराठी साहित्य में श्रत्रपती शिवाजी का स्वरूप।

समकालीन मराठी साहित्य में संत तुकाराम, अफजलवध के बाद जिजाबाई के सामने अज्ञानदास का पोवाडा, शाहिर तुलसीदास का पवाडा, समर्थ रामदास द्वारा शिवाजी की प्रशंसा जैसे आदि का शिवाजी महाराज को लेकर सृजित साहित्यीक काव्य अध्ययन किया जाएगा। साथ ही पेशवे कालीन तीन जीवनियाँ और एक शिलालेख लिखा गया है। उसके बाद लोकहितवादी, महात्मा फुले का पोवाडा लोकमान्य तिलक द्वारा, पुन्ह सार्वजनीक जयंति के द्वारा छत्रपती शिवाजी को राष्ट्रीय आंदोलन के प्रेरणा नायक मानना जैसे आदी का अध्ययन इस अध्याय में किया जाएगा।

चतुर्थ अध्याय : मध्यकालीन हिंदी-मराठी साहित्य में छत्रपती शिवाजी के स्वरूप की समानएँ और विषमताएँ।

इस अध्याय में छत्रपती शिवाजी के बहिरंग चित्रण में राजवंश और कुल के बारे में, नामकरण आदी महत्वपूर्ण दोनो भाषाओं के साहित्यकारों की समानता और विषमताओं का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही में अंतरंग चित्रण में छत्रपती शिवाजी का बचपन और शिक्षा के बारे में उनके संभाषण कला, जो असंभव बातो को संभव

करणेवाले के रूप में दोनों भाषाओं के साहित्यकारों का दृष्टीकोण कर तूलनात्मक अध्ययन किया जाएगा।

इसी में छत्रपती शिवाजी की नम्रता, बुद्धीमत्ता, दुरदर्शीता, कार्यक्षमता, जनप्रेम, दृडप्रज्ञा, संघटनशक्ती, स्वाभीमान, स्त्री संबद्ध में विचार अन्य महान वीरों के साथ शिवाजी की तुलना किस प्रकार कि गई है आदी बातों को लेकर मध्यकालीन दो भाषाओं के साहित्य में साम्य और विषमताओं का अध्ययन इस अध्याय में किया जायगा।

पंचम अध्याय : भाषाशिल्प।

मध्यकालीन छत्रपती शिवाजी के स्वरूप को स्पष्ट करणे के लिए दोनो भाषाओं के कवियों ने, अलग-अलग प्रकार के अलंकारों का उपयोग किया है। जिसमें उपमा, रूपक, यमक, श्लेश, उत्प्रेक्षा आदि आलंकारों का अध्ययन किया जाएगा। हिंदी में काव्य लिखा गया है, और मराठी में पवाडा। दोन भाषाओं में वीररस का परिपाक हुआ है। इसलिए भाषा की दृष्टि से अध्ययन करना भी महत्वपूर्ण होगा।

छः अध्याय : उपसंहार ।

इस अध्याय में उपर्यूक्त अध्यायों में से महत्वपूर्ण उपलब्धि को प्रस्तुत किया जाएगा। छत्रपती शिवाजी महाराज की साहित्यिक स्वरूप की विषेशताओं का अध्ययन किया जाएगा।

शोधछात्र	**शोध-निर्देशक**
वानखेडे विलास कोंडीबा	डॉ. भगवान एन. जाधव स्नातक, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र पीपल्स कॉलेज, नांदेड.